जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 111
जून, 2025
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

जून 2025 **वर्ष-11 • अंक-111**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

6. कला में नए प्रयोग करता हूँ
(युवा गोंड कलाकार **राहुल सिंह श्याम** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत)

लेख

8. मानवीय रिश्तों का उलझता गणित : **गिरिश्वर मिश्र**
10. लोक में उत्सव और अनुष्ठान : **डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला**
12. बंजारा समुदाय के गोत्र एवं कुल देवियाँ : **संगीता सिंह**
15. प्रेमचंद की रचनाओं में प्रतिबिंबित लोक जीवन : **राजेन्द्र सिंह गहलौत**
20. भील लोकोत्सव : नाटक नृत्य के उत्सव : **डॉ. भगवान दास**
25. महाराजा सयाजी और विट्ठल रामजी शिंदे : **देवदत्त कदम**
अनुवाद- जर्नादन

कहानी

29. गाँव में मेरी माँ : **समीर सुब्बा**
31. रसप्रिया : **फणीश्वरनाथ रेणु**

कविताएँ/दोहे/ग़ज़ल

37. **अरूण रॉय** 37. **उषा किरण** 38. **सुशांत सुप्रिय** 39. **हरेराम समीप** 39. **अशोक कुमार 'नीरद'**

धरोहर

42. हमारी संस्कृति हमारी विरासत : **सुधा त्रिपाठी**

पुस्तक समीक्षा

44. इतिहास से छुटकारा संभव नही : **डॉ. सत्य प्रिय पांडेय**
45. सभ्यता के गुणसूत्र : **अशोक सिंह**
46. जन मोर्चा तथा अन्य कहानियाँ : **जयराम सूर्यवंशी**

लघुकथा

40. सहयात्री : **रविशंकर सिंह**
19. **कहावतें**
41. **यादें**
40. **क्या है ककसाड़?**
49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण गोंड कलाकृति - राहुल सिंह श्याम
(इनकी विशेषता है गोंड चित्र में ज्यामितीय रेखाओं का प्रयोग)
मो. 79877-52157

संपादकीय

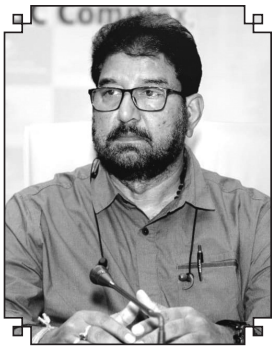

मई आखिरकार बीत ही गई और जून का कई मायनों में खास अंक आपके हाथों में है।

अबकी बार मई आई है तो यूँ लग रहा है जैसे किसी पुराने प्रेमी की चिट्ठी-गर्म, अधजली और ग़लत पते पर पहुँची हुई।

एक ज़माना था जब मई का मतलब होता था-आम की गुठलियों में छिपी उम्मीदें, गुड़ की ढेली के साथ पीतल के लोटे में मटके का ठंडा पानी और दोपहर की उनींदी नींद।

लेकिन अब मई?

अब मई का मतलब है—"कहीं जालिम हाकिम सूरज की अदालत में आग उगलती हवाओं की गवाही, तो कहीं शर्म से जमकर बर्फ़ बन गए मौसम के आँसुओं की बेमौसम ओलावृष्टि का रोजनामचा।"

धरती अब पसीना नहीं बहा रही-वह थकहार कर चुपचाप कोमा में जा चुकी है।

UN की ताज़ा रिपोर्ट बताती है कि हर साल 80 लाख लोग सिर्फ वायु प्रदूषण से मरते हैं—यानी हर 4 सेकंड में एक इंसान इस "सभ्य विकास" की भेंट चढ़ रहा है।

दुनिया के 20 सबसे अमीर देश 80% ग्रीनहाउस गैस उगलते हैं, और गरीब देश 'प्राकृतिक आपदा' के नाम पर मुआवज़ा भी उन्हीं से माँगते हैं—जिनसे ज़हर खरीदा था।

"धर्मेण हीनाः पशवः समानाः" (मनुस्मृति)

(धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान होता है)

लेकिन दुर्भाग्य देखिए-आज का मनुष्य पशु भी नहीं रहा, क्योंकि जानवर अपने ही कुनबे का गला नहीं काटते।

और,

उसी धर्म के नाम आज मनुष्य ही मनुष्य का सबसे शत्रु बन गया है।

और,

उसी धर्म के नाम मनुष्य पूरी मानवता का समूल नाश करने को तुला है।

अगर सच में कोई ईश्वर है, जिसने आकाशगंगाएँ बिछाईं, सूरज को जलाया, चाँद को ठंडक दी, तो वह इस 'धरती ब्रांड' के मनुष्य से निश्चित ही बेहद नाराज़ होगा।

जिस 'राम', 'अल्लह', 'यीशु' या 'गुरु' आदि के नाम पर लोग तलवारें निकालते हैं,

उन सभी ईश्वरपुत्रों ने शायद अब तक धरती छोड़ने के आवेदन पत्र भर दिए होंगे।

हो सकता है ऊपर कहीं कोई देवसभा चल रही हो, और उसमें यह प्रस्ताव पास हो चुका हो, "मानवता अब रद्द की जाती है, यह प्रयोग असफल रहा।"

बाज़ारवाद ने जो नहीं किया, धर्मांधता ने कर डाला। अब मनुष्य एक उपभोक्ता नहीं, एक हथियार है।

धर्म, पूंजी और राजनीति का यह घातक गठजोड़ मानव सभ्यता के लिए भस्मासुर-युग का उद्घोष है।

और बाज़ार? वह सब देखकर मुस्कुरा रहा है-एक हाथ में लो-केलोरी चिप्स, दूसरे में कार्बन क्रेडिट।

"We won't have a society if we destroy the environment" — Margaret Mead

पर समाज तो कब का गया...

अब बस फेसबुक प्रोफाइल बचे हैं, इंस्टाग्राम की रीलें हैं और एक-एक मीटर पर बिकती हुई 'उम्मीद' है।